Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2018 Special Issue - 69

Chief Editor : Dr. Dhanraj Dhangar
Assist. Professor,
Dept. of Marathi,
MGV's Arts and Commerce College, Yeola
Dist. Nashik (M.S.) India.

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Indian Citation Index (ICI)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Scanned with CamScanner

74	कृषी पर्यटन उद्योग : एक संधी	डॉ. लीलाधर खरपुरीये	381
75	बाबुराव बागुल यांच्या कथेचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये	डॉ. सिद्धार्थ इंगोले	385
76	जागतिकीकरण : एक जागतिक अर्थव्यवस्था व प्रक्रिया	प्रा. लक्ष्मण बैसाणे	389
77	महाराष्ट्रातील काही आदिवासी जमातींवर एक दृष्टीक्षेप	प्रा.स्मिता माळवे	393
78	फेसाटी कादंबरीचा आकृतीबंध	प्रा. राहुल चव्हाण	398
79	यशवंतराव चव्हाण यांच्या प्रशासकीय कार्याचा विश्लेषणात्मक अभ्यास	प्रा. चंद्रकांत मोरे	403
80	संत जनाबाईची ईश्वर भक्ती	प्रा. हिरा वाघ	408
81	व्यावसायिक शिक्षण व प्रशिक्षणात कौशल्य विकास व गुणवत्ता	डॉ. नासीर गिरासे	410
82	कार्य विश्लेषण	डॉ. चंद्रमणी गजभिये	413
83	सामाजिक व व्यावसायिक विकासात गृह अर्शास्त्राची भूमिका	डॉ. माधुरी देशमुख	416
84	बदलती ग्राम संस्कृती आणि आजची ग्रामीण कथा	प्रा. नंदकुमार माने	421
85	भारतातील मानवी हक्क चळवळ : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. सतीश देसाई	426
86	ग्रामीण विकासात महिलांचा सहभाग	प्रा. आशिष गुजराथी	432
87	यादवकालीन सिन्नरचा राजकीय इतिहास	डॉ. संतोष बोडके	436
88	आशा बगे यांच्या कादंबऱ्यांमधून आलेली आत्मभावनात्मक प्रवृत्ती	डॉ. ज्ञानेश्वर सोनवणे	442
89	ग्रामीण तरुणाच्या जीवनाची कहाणी 'झाकोळलेल्या वाटा'	डॉ. भाऊसाहेब गमे	448

हिंदी विभाग

90	ममता कालिया कृत उपन्यास "दौड़" में लुप्त होती मानवीय संवेदना	अनिता देवी	452
91	डॉ. जयप्रकाश कर्दम कि नया भारत बनाएँ कविता में अभिव्यक्त वर्तमान भारत की विसंगातीयाँ	डॉ. सुचिता गायकवाड	455
92	समकालीन उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की राजनीति	प्रा. एच.टी.पोटकुले	460
93	समकालीन महिला लेखिका मन्नू भंडारी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	डॉ. मिनल बर्वे	464
94	भारतीय नारी विमर्श की प्रातिनिधिक रचना 'ऐ लडकी'	प्रा. राजेश भामरे	469
95	'नेपथ्य राग' की दीपशिखा : 'खना'	डॉ.विजयप्रसाद अवस्थी और संगिता देशमुख	472
96	अमानवियता का दर्द 'सद्गती'	प्रा. दिलीप पाटील	476
97	आदिवासी क्रांतीकारी और उनका कार्य	डॉ. मालती शिंदे	479
98	इक्कीसवी सदी की आदिम अभिव्यक्ती 'जंगल पहाड के पाठ'	डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन'	487
99	'शोषितनामा' : हिंदी का प्रथम दलित महाकाव्य	डॉ. मनोहर पाटील	497
100	निर्मल वर्मा की कहानियों में भाषा तथा जीवन के बदलते संदर्भ के रूप	डॉ. प्रमोद पाटील	500

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 69 : Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

समकालीन उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की राजनीति

प्रा. श्रीमतीएच.टी. पोटकुले
कला व विज्ञान महाविद्यालय,
शिवाजीनगर,गढी, गेवराई जि.बीड

वर्तमान समाजव्यवस्था में मानवता मर रही है और दानवता अट्टहास कर रही है। आजादी के पूर्व हमारी मनोकामना समाजवादी व्यवस्था निर्माण करने की थी किन्तू आजादी के ६५ वर्ष बाद भी इन स्थितियों में अधिक परिवर्तन नही हूआ है। आज भी आम जनता फूटपाथ पर भूखे पेट दिन काट रही है। किडे–मकोडों के समान जीवन जीने के लिए विवश हो गयी है। इस अभाव ग्रस्त स्थिती का यर्थाथ रुप में चित्रित करने का प्रयास समकालीन हिंदी उपन्यासकार'फणिश्वरनाथ रेणू'–मैला आँचल,परती परिकथा, 'यादवेंद्र शर्मा–हजार घोडो का सवार','नागार्जुन–बलचनामा'आदि ने अपने उपन्यासमें किया है।

भारत कृषीप्रधान और गाँवो का देश है। यहाँ की अधिकतर जनसंख्या गाँवो में वास करती है और लगभग ७० प्रतिशत जनसंख्या कृषि से संबधित व्यवसाय से संलग्न है। इसिलिए ग्रामीण जीवन की अध्ययन की आवश्यकता बढ जाती है। समकालीन उपन्यासकारों ने स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के बाद निर्माण हूई ग्रामीण जीवन पध्दती,बदलती ग्रामीण जीवन की राजनीतीक अवसरवादिता,स्वार्थ और क्षुद्रता को बडी कुशलता से चित्रित किया है। समकालीन उपन्यासकार रेणु,यादवेंद्र शर्मा,नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में गाव में हो रहे बदलाव,लोगो का हंसी–मजाक,प्रेम–घृणा,सौहार्द्र–वैमनस्य,ईर्ष्या–द्वेष,संवेदना–करुणा,संबंध शोषण के साथ–साथ भ्रष्ट राजनेताओं का कुकर्म,समाज,धर्म,जाती सभी विसंगतीयों पर अपने कलम से प्रहार किया है। इन उपन्यासकारों ने भारत के तमाम ग्रामीण,आंचालिक भू–भागों में रहने वाले उन तबकों,ग्रामो की दास्ता बयान की है,जो अभाव,अज्ञान–अशिक्षा,भूखमरी और बेबसी के कारण जानवरों का–सा जीवन जीने को मजबूर है और कुछ लोग तो गाव के नेताओं और धनवानों के लालच की वजह से इधर से उधर धकेले जा रहे है।

आजादी के ६० साल बाद भी ग्रामीण इलाकों गाँवों में रोटी के लिए दर–दर की ठोकरे खाना कृषक,मजदूर,गरीब,आम जनता की नियती बन गयी है। आजादी के केवल मूठ्ठीभर लोगो को ही मिली है। आम जनता ने आजादी के जो सुंदर सपने संजोये थे वे आजादी के बाद मिट्टी में मिल गये। इस खोखली आजादी को यादेंवद्र शर्मा ने 'हजार घोडो का सवार'उपन्यास में चित्रित किया है। इस उपन्यास का गीधू आजादी के संबंध में कहता है– ''यह साली कैसी आजादी है? कैसी व्यवस्था है। कैसा न्याय है?क्यों नही रौंद डाला इसे। यदि आजादी के बाद भी गरीबों को इसी दुर्दशा में जीना है तो खाक है यह आजादी यह स्वतंत्रता।''१

आजादी के पूर्व हमारे भारतीय नेताओं ने आम जनता को बहुत सपने दिखाये,बहुत आश्वासन दिये लेकिन उसकी पुर्ती नहीं की। भारतीय शासन व्यवस्था ने भी ग्राम सुधार के लिए 'भूमि सुधार','रामराज्य'निर्माण करने के लिए अनेक कार्यक्रम बनाए किन्तु इन कार्यक्रमों से मूल सुधार नही हो सके। सामान्य किसान सामान्य ही रह गये और पूर्व जमींदार बड़े किसान बन गये। इसका चित्रण हमे रेणूजी के 'परति परिकथा'उपन्यास में दिखाई देता है। उपन्यास का '' गूरुदास बाबू जमींदार नही किसान है। दस हजार बीघे जमीन है,दो–दो हवाई जहाज रखते हैं। उपन्यास का भोलाबाबू भी किसान है जिनके पास पंद्रह हजार बीघे जमीन है डेढ दर्जन ट्रैक्टर रखते हैं पर यह बात भी सच्ची है कि वे जमीदार नही हैं।''२

Scanned with CamScanner

है। उपन्यास का बलचनामा कहता है''आम,लताम,जामुन,कटहल, खीसर,कुसियार,ककडी,तरबूज और खरबूजा... हमारे पेट भरने में इससे काफी मदद मिली। दादी अंधेरे में निकल आती । गन्ना और दूरे मौसमी फलों का यही हाल था।'' (६)

भारतीय संविधान के निर्माता डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने सभी भारतीयों को मतदान का अधिकार दिया है। इस अधिकार के सहारे ग्रामीण जनता अपना प्रतिनिधी चुनती है जो ग्रामीण जीवन की समस्याओं को सुलझाये। किन्तु ग्रामीण जनता अज्ञानी,अशिक्षित,निर्धन होने के कारण राजनीति का फायदा ग्रामीण इलाकों के अमिरों को ही मिलता है। ग्रामीण परिवेश में राजनेता आम जनता को प्रलोभन देकर अपनी और वशीभूत करते है। ग्रामीण राजनीति चुनाव में वही जितता है जो अपनी दौलत,धन,संपत्ती का दुरुपयोग अपने हित में करता है। आज भी ग्रामीण जनता धन,शराब की बोतल या किसी भी भावी प्रलोंभनों की और आकर्षित होकर अपना वोट देती है या फिर राजनेता जबरदस्ती आम जनता को धन वस्तुओं का लालच देकर वोट खरिदते है।'महाभोज'के दा साहब कहते है–''वोट की किमत को पांच रुपये पर उतार दिया जाये,बड़ी सोचनीय स्थिति है यह।''७

जिंदा रहने के लिए अन्न और पाणी की आवश्यकता है उसी प्रकार नागरी चुनाओं के समान ग्रामीण चुनाओं में धन का महत्व बढ गयाा है। ग्रामीण परिवेश में धन का लालच,प्रलोभन और कूटनितीओं से ही चुनाव जीते जाते है। रेणू जी ने 'परती परिकथा में इसका चित्र कुछ इस प्रकार चित्रित किया है। यँहा पर तो वोटोरों के साथ–साथ कैण्डेट को ही खरिदा है। वह कहता है,''झा जी! दोनो कैण्डेट समझिये कि मेरी मुट्ठी में है। मैंने लंगी लगा दी है। एक को सरपंची का लोभ दिया है और दूसरा कुछ रुपया चाहता है।''८

भारतीय ग्रामीण परिवेश में भी आरक्षण विधेयक के कारण महिलायें राजनीति में चुनकर तो आने लगी पर वो स्वंय के विचारो से कार्य नही कर पाती। ग्रामीण राजनीति में सक्रिय पुरुष राजनेता महिला आरक्षित प्रभाग में अवनी पत्नीयों को ही चुनाव में खडी करके चुनकर लाते है।अपनी पत्नी का विकास करना या उसे राजनीति में लाना उनका उद्देश नहीं रहता वे तो सत्ता को अपने घर में रखना चाहते है। ग्रामों में महिला चुनाव तो जीतती है पर स्वंय के विचारों से कार्य नही कर पाती। वह अपने पिता,भाई,पति के मार्गदर्शन में ही कार्य करती हैं।वह मात्र कटपुतली बनकर रह जाती है। इन स्थितियों में परिवर्तन आवश्यक है। आज शहरों के साथ–साथ ग्रामीण महिलायें भी अपने अन्याय–अत्याचार का विरोध करती है।वह अपने 'स्व'अस्तित्व के लिए अनिष्ठ परंपरा नियमों के विरुध्द लड़ रही है।

भारत लोकशाही प्रधान देश है। लोकशाही प्रधान देश में यह अपेक्षित है कि सभी भारतीय को चाहे शहरी परिवेश के हो या गामीण सभी की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो जाये। सभी को समान अधिकार,समान न्याय मिले। कोई भी भूखा–प्यासा ना सोये। रोटी,कपडा और मकान जैसी आवश्यकता सभी की पूरी हो जाये। लेकिन दुःख कि बात ये है कि भ्रष्ट राजनीति और स्वार्थ के कारण दस प्रतिशत व्यक्तियों के पास ही सारा धन केंद्रित हो गया है। और नब्बे प्रतिशत आम व्यक्ति रोटी के लिए तरस रहे हैं। और विडंबना यह है कि हमारा भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकशाही प्रधान देश है। हमारी भारतीय व्यवस्था कृषीप्रधान अर्थ व्यवस्था है। देश का विकास करना हो तो शहरों के साथ–साथ ग्रामों का विकास होना अधिक आवश्यक है। इसी संदर्भ में जो 'ग्राम विकास'यह संकल्पना सामने आयी है उसके अनुसार ग्रामीण जीवन के विकास से संबंधित सभी घटकों का कृषी, कृषी से संबंधित उद्योग,बाजार,शिक्षा–वित्त शिक्षा,कानून शिक्षा वैद्यकिय सेवा का विकास आवश्यक और अपेक्षित है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ सूची:–

१. हजार घोडो का सवार–यादवेंद्र शर्मा,पृ.३६९
२. परती परिकथा – फणिश्वरनाथ 'रेणू',पृ.३१
३. महाभोज – मन्नू भंडारी,पृ.४८
४. परती परिकथा – फणिश्वरनाथ 'रेणू',पृ.२१
५. मैला आँचल – फणिश्वरनाथ 'रेणू',पृ.५५
६. बलचनामा – नागार्जुन,पृ.१०
७. महाभोज – मन्नू भंडारी,पृ.१४७
८. परती परिकथा – फणिश्वरनाथ 'रेणू',पृ.२८५

Scanned with CamScanner